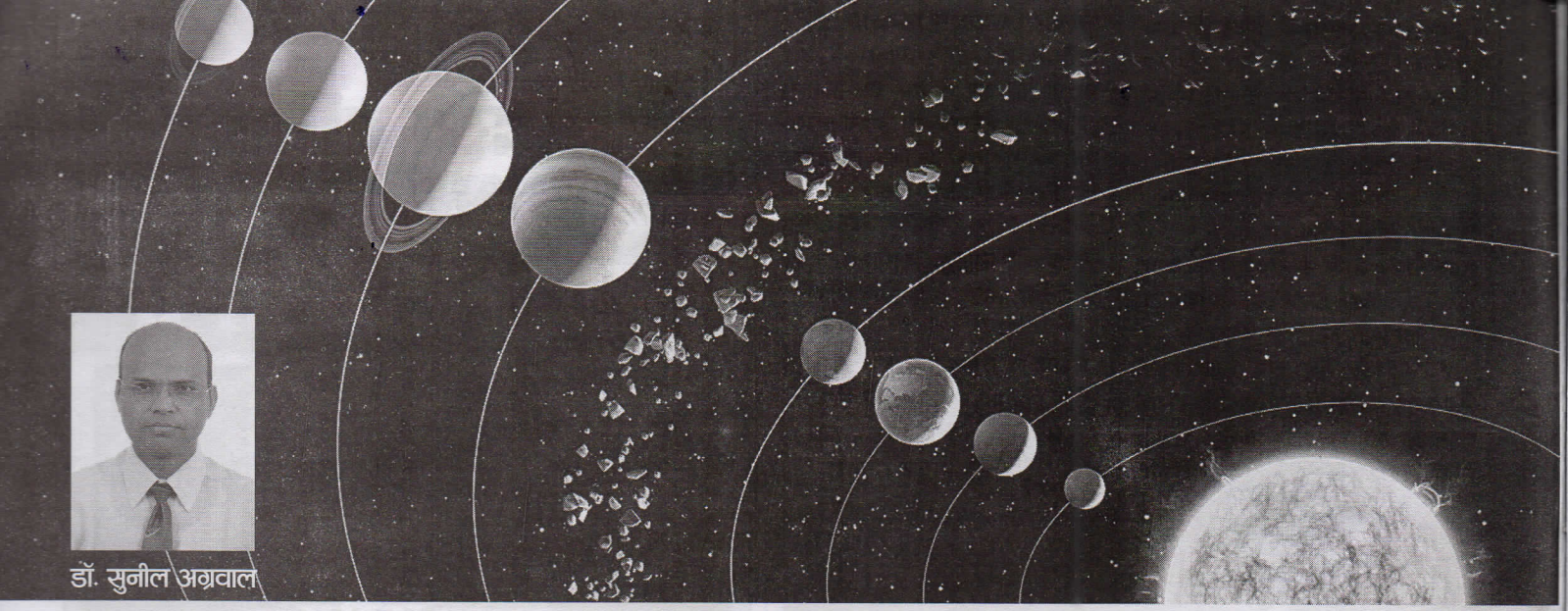

डॉ. सुनील अग्रवाल

उच्च-नीच ग्रह आकलन हेतु महत्त्वपूर्ण पहलू

सामान्यतः देखा गया है कि जातक की जन्मपत्रिका में उच्च-नीच के ग्रह को देखते ही उससे संबंधित फलों के बारे में एक राय-सी बन जाती है। कभी-कभी समयाभाव के कारण इसी आधार पर फलादेश भी कर दिया जाता है जो कि शास्त्रसंगत नहीं है।

आइए उदाहरण के तौर पर निम्नलिखित लग्न कुण्डली पर विचार करते हैं :

जन्मपत्रिका

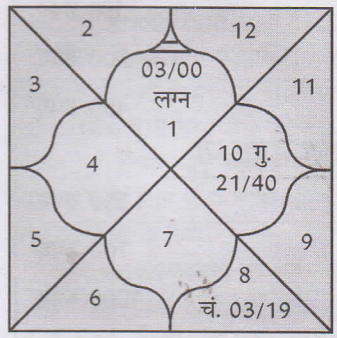

जल्दबाजी में यह कहा जा सकता है कि जातक की माता को कष्ट होगा अथवा जातक की माता से संबंध अच्छे नहीं होंगे, क्योंकि चतुर्थेश एवं माताकारक चंद्रमा परम नीच अंश पर अष्टमस्थ है। इसी प्रकार गुरु भी दशम भाव में नीचस्थ है जिस कारण यह कहा जा सकता है कि गुरु भाग्य एवं कर्म संबंधी कारकत्वों में अत्यधिक हानि करेंगे। ज्योतिष शास्त्र में नवांश कुंडली को जन्मपत्रिका का पूरक माना गया है। आइए अब उपर्युक्त कुण्डली के नवांश पर गौर करते हैं :

नवांश पत्रिका

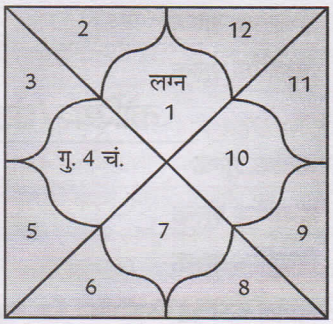

जो चंद्रमा और गुरु जन्मपत्रिका में हमें अत्यन्त अशुभ लग रहे थे, वे नवांश में क्रमशः केंद्र में स्वराशि और उच्च के हो गए जिससे अशुभता में अत्यधिक कमी आ गई बल्कि कुछ शुभता की ओर ही चले गए।

ग्रह	उच्च	नीच
सूर्य	मेष 10° तक	तुला 10° तक
चंद्रमा	वृषभ 03° तक	वृश्चिक 03° तक
	मकर 28° तक	कर्क 28° तक
बुध	कन्या 15° तक	मीन 15° तक
गुरु	कर्क 05° तक	मकर 05° तक
शुक्र	मीन 27° तक	कन्या 27° तक
शनि	तुला 20° तक	मेष 20° तक

उच्च-नीच ग्रहों के आकलन हेतु पहलू

उच्च-नीच ग्रहों का आकलन करते समय सभी पहलुओं पर ध्यान देने के पश्चात ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए। कुछ महत्त्वपूर्ण पहलू निम्नलिखित हैं :

1. वर्ग कुण्डलियां : जैसे हमने उपर्युक्त उदाहरण में देखा कि जन्मपत्रिका के ग्रहों का आकलन नवांश कुंडली में करना अति आवश्यक है। इसके अतिरिक्त घटना के अनुसार संबंधित वर्ग कुण्डली से भी पुष्टि करनी चाहिए।

2. नीचभंग राजयोग : भंग का अर्थ है समाप्त होना और नीचभंग राजयोग का अर्थ है ग्रह का नीचत्व समाप्त करके राजयोग देने वाला योग। ज्योतिषीय ग्रंथों के अनुसार ग्रह का नीचभंग होकर राजयोग मिलता है। यदि :

- जिस राशि में ग्रह नीच का होता है, राशि लग्न से या चंद्रमा से केंद्र में हो।
- जिस राशि में ग्रह नीच का होता है, उसी राशि में उच्च का होने वाला ग्रह (उच्च नाथ), लग्न से या चंद्रमा से केंद्र में हो।
- जिस राशि में एक ग्रह नीच का हो, उसी राशि में एक ग्रह उच्च का भी हो।
- नीचस्थ ग्रह पर राशीश की दृष्टि हो।
- नीच और उच्च नाथ परस्पर केंद्र में हों।
- नीच और उच्च नाथ चंद्रमा से केंद्रस्थ हों।

3. कालिदास रचित उत्तरकालामृत्त के अनुसार पत्रिका में पापी ग्रह नीच राशि में हों, शुभ ग्रह केंद्र-त्रिकोण स्थानों में बली हों और दशम, नवम तथा चतुर्थ भावों के स्वामी नवम अथवा दशम भाव में इकट्ठे हों, तो जातक बुद्धिमान, धनी, यशस्वी, प्रतापी, दीर्घायु, राजा होता है।

4. पाराशर जी के अनुसार त्रिक भाव अर्थात् षष्ठ, अष्टम एवं द्वादश भावों के स्वामी किसी तरह भाव/राशि परिवर्तन करें, तो विपरीत राजयोग निर्मित होता है। इसके अतिरिक्त कुछ ग्रंथकार त्रिक भावों की निर्बल स्थिति (नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री आदि) को भी राजयोग फलप्रद मानते हैं।

5. के.एन.राव तृतीय, षष्ठ, अष्टम भावों के स्वामियों के नीचस्थ होने को राजयोग फलप्रद मानते हैं।

6. इसके अतिरिक्त नीच ग्रहों पर पड़ने वाली मित्र ग्रहों की दृष्टि या शुभकर्तरि अशुभता में ह्रास करता है।

7. इसके अतिरिक्त यह जानना भी आवश्यक है कि ग्रह बल की

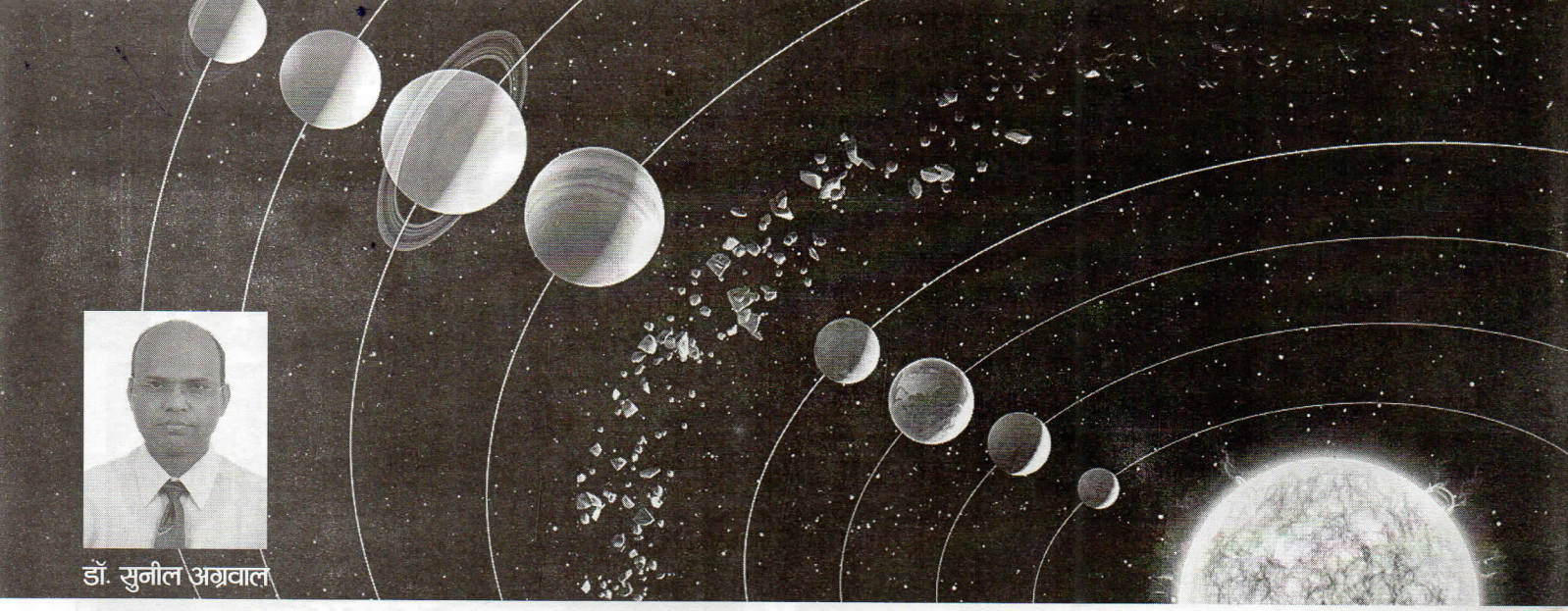

डॉ. सुनील अग्रवाल

उच्च-नीच ग्रह आकलन हेतु महत्त्वपूर्ण पहलू

सामान्यतः देखा गया है कि जातक की जन्मपत्रिका में उच्च-नीच के ग्रह को देखते ही उससे संबंधित फलों के बारे में एक राय-सी बन जाती है। कभी-कभी समयाभाव के कारण इसी आधार पर फलादेश भी कर दिया जाता है जो कि शास्त्रसंगत नहीं है।

आइए उदाहरण के तौर पर निम्नलिखित लग्न कुण्डली पर विचार करते हैं :

जन्मपत्रिका

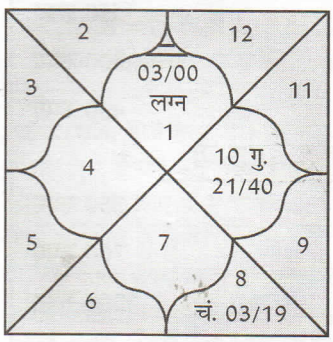

जल्दबाजी में यह कहा जा सकता है कि जातक की माता को कष्ट होगा अथवा जातक की माता से संबंध अच्छे नहीं होंगे, क्योंकि चतुर्थेश एवं माताकारक चंद्रमा परम नीच अंश पर अष्टमस्थ है। इसी प्रकार गुरु भी दशम भाव में नीचस्थ है जिस कारण यह कहा जा सकता है कि गुरु भाग्य एवं कर्म संबंधी कारकत्वों में अत्यधिक हानि करेंगे। ज्योतिष शास्त्र में नवांश कुंडली को जन्मपत्रिका का पूरक माना गया है। आइए अब उपर्युक्त कुण्डली के नवांश पर गौर करते हैं :

नवांश पत्रिका

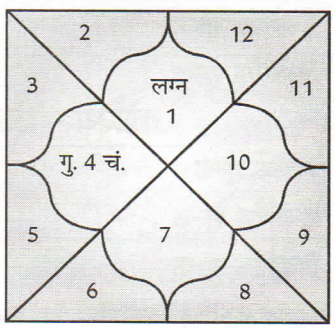

जो चंद्रमा और गुरु जन्मपत्रिका में हमें अत्यन्त अशुभ लग रहे थे, वे नवांश में क्रमशः केंद्र में स्वराशि और उच्च के हो गए जिससे अशुभता में अत्यधिक कमी आ गई बल्कि कुछ शुभता की ओर ही चले गए।

ग्रह	उच्च	नीच
सूर्य	मेष 10° तक	तुला 10° तक
चंद्रमा	वृषभ 03° तक	वृश्चिक 03° तक
	मकर 28° तक	कर्क 28° तक
बुध	कन्या 15° तक	मीन 15° तक
गुरु	कर्क 05° तक	मकर 05° तक
शुक्र	मीन 27° तक	कन्या 27° तक
शनि	तुला 20° तक	मेष 20° तक

उच्च-नीच ग्रहों के आकलन हेतु पहलू

उच्च-नीच ग्रहों का आकलन करते समय सभी पहलुओं पर ध्यान देने के पश्चात ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए। कुछ महत्त्वपूर्ण पहलू निम्नलिखित हैं :

1. वर्ग कुण्डलियां : जैसे हमने उपर्युक्त उदाहरण में देखा कि जन्मपत्रिका के ग्रहों का आकलन नवांश कुंडली में करना अति आवश्यक है। इसके अतिरिक्त घटना के अनुसार संबंधित वर्ग कुण्डली से भी पुष्टि करनी चाहिए।

2. नीचभंग राजयोग : भंग का अर्थ है समाप्त होना और नीचभंग राजयोग का अर्थ है ग्रह का नीचत्व समाप्त करके राजयोग देने वाला योग। ज्योतिषीय ग्रंथों के अनुसार ग्रह का नीचभंग होकर राजयोग मिलता है। यदि :

- जिस राशि में ग्रह नीच का होता है, राशि लग्न से या चंद्रमा से केंद्र में हो।
- जिस राशि में ग्रह नीच का होता है, उसी राशि में उच्च का होने वाला ग्रह (उच्च नाथ), लग्न से या चंद्रमा से केंद्र में हो।
- जिस राशि में एक ग्रह नीच का हो, उसी राशि में एक ग्रह उच्च का भी हो।
- नीचस्थ ग्रह पर राशीश की दृष्टि हो।
- नीच और उच्च नाथ परस्पर केंद्र में हों।
- नीच और उच्च नाथ चंद्रमा से केंद्रस्थ हों।

3. कालिदास रचित उत्तरकालामृत्त के अनुसार पत्रिका में पापी ग्रह नीच राशि में हों, शुभ ग्रह केंद्र-त्रिकोण स्थानों में बली हों और दशम, नवम तथा चतुर्थ भावों के स्वामी नवम अथवा दशम भाव में इकट्ठे हों, तो जातक बुद्धिमान, धनी, यशस्वी, प्रतापी, दीर्घायु, राजा होता है।

4. पाराशर जी के अनुसार त्रिक भाव अर्थात् षष्ठ, अष्टम एवं द्वादश भावों के स्वामी किसी तरह भाव/राशि परिवर्तन करें, तो विपरीत राजयोग निर्मित होता है। इसके अतिरिक्त कुछ ग्रंथकार त्रिक भावों की निर्बल स्थिति (नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री आदि) को भी राजयोग फलप्रद मानते हैं।

5. के.एन.राव तृतीय, षष्ठ, अष्टम भावों के स्वामियों के नीचस्थ होने को राजयोग फलप्रद मानते हैं।

6. इसके अतिरिक्त नीच ग्रहों पर पड़ने वाली मित्र ग्रहों की दृष्टि या शुभकर्तरि अशुभता में ह्रास करता है।

7. इसके अतिरिक्त यह जानना भी आवश्यक है कि ग्रह बल की

सम्पूर्ण गणना षडबल के अंतर्गत की जाती है। महर्षि पराशर के अनुसार षड्बल में छह प्रकार के बल स्रोत हैं : स्थान बल, दिग्बल, कालबल, चेष्टाबल, नैसर्गिक बल और दृग्बल। स्थान बल के भी पांच भाग हैं : उच्च-नीच बल, सप्तवर्ग बल, ओज युग्म बल, केंद्र बल और द्रेष्काण बल अर्थात् छह ग्रह बल स्रोतों में से एक हैं 'स्थान बल' और स्थान बल के पांच स्रोतों में से एक है उच्च-नीच बल अर्थात् केवल ग्रह की उच्च-नीच स्थिति से ही उसका सम्पूर्ण बल ज्ञात नहीं किया जाता। आइए अब उदाहरणों के माध्यम से चर्चा करते हैं।

नीच ग्रहों के फलों की बात सोचते ही बादशाह अकबर की जन्मपत्रिका याद आती है जिसमें लग्नेश सूर्य और कर्मेश शुक्र दोनों ही नीच राशिस्थ हैं।

बादशाह अकबर

जन्म दिनांक : 15 अक्टूबर, 1542
जन्म स्थान : 02:00 बजे
जन्म समय : अमरकोट (पाकिस्तान)

जन्मपत्रिका

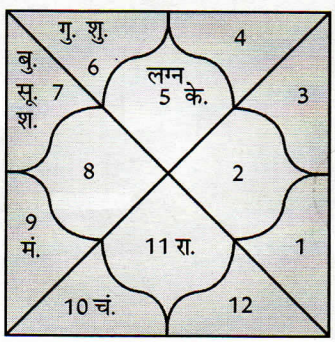

नवांश कुण्डली

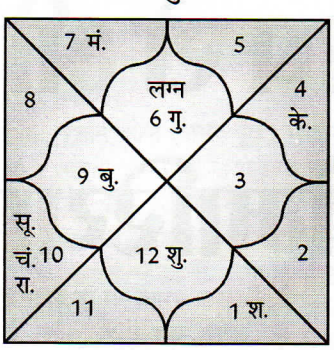

उपर्युक्त जन्मपत्रिका के लग्नेश सूर्य और कर्मेश शुक्र नीच राशिस्थ हैं। कर्मेश पंचमेश तथा वर्गोत्तम गुरु से युत है और राशीश बुध से राशि परिवर्तन में है। माना जाता है कि राशि परिवर्तन में लिप्त ग्रह स्वराशि समान फलप्रद होते हैं। लग्नेश और कर्मेश दोनों नीचभंग राजयोग में हैं, जिससे अत्यधिक विषम परिस्थितियां मिलीं और साथ ही उनसे लड़ने की सम्पूर्ण क्षमता भी। जन्मपत्रिका के कर्मेश निम्न नवांश कुंडली में केंद्र में उच्च राशिस्थ हैं। सूर्य भी त्रिकोण में कुछ पीड़ित है, परन्तु वर्गोत्तम गुरु दृष्ट भी है। इन्हीं कारणों से लग्नेश और कर्मेश के नीच होने के बावजूद अकबर को लग्नेश और कर्मेश संबंधित शुभ फल मिले।

अभिनेता अमिताभ बच्चन

जन्म दिनांक : 11 अक्टूबर, 1942
जन्म समय : 16:00 बजे
जन्म स्थान : इलाहाबाद (उ.प्र.)

जन्मकुण्डली

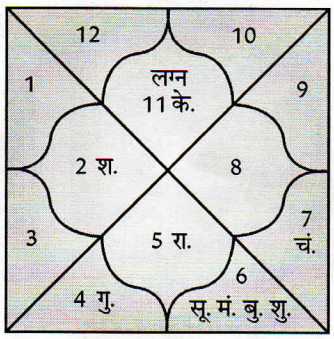

नवांश कुण्डली

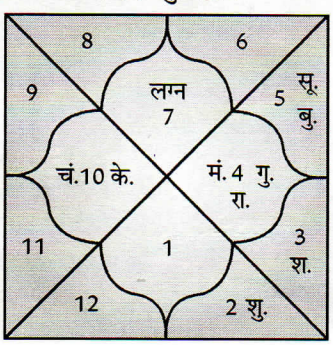

केवल जन्मपत्रिका को देखकर कोई कह सकता है कि जातक भाग्यहीन होगा, क्योंकि भाग्येश नीच का होकर अष्टमस्थ है, परन्तु उच्च नाथ और राशीश से युत होने से नीचभंग राजयोग है। नवांश में भी स्वराशिस्थ होने का बल भी मिला है। नवमेश-दशमेश की युति उत्कृष्ट राजयोग प्रदान करती है, परन्तु अष्टम भाव में यह युति होने से राजयोग तो मिले, परन्तु विषम परिस्थितियां भी सदैव उपस्थित रहीं। उच्चस्थ एवं वर्गोत्तम गुरु ने भी जन्मपत्रिका को अत्यन्त बल प्रदान किया है। निष्कर्षतः किसी ग्रह का किसी राशि विशेष में स्थित होने से उसे केवल अतिरिक्त उच्च/नीच बल स्थान प्राप्त होता है। सभी प्रकार के बलों की गणना और योगों के आकलन के पश्चात ही फलित किया जाना चाहिए। ●

तेल के बारह अचूक उपाय

तेल शनि से संबंधित पदार्थ है। तेल का हमारे जीवन में बहुत बड़ा योगदान है। तेल के कई फायदे भी हैं और नुकसान भी।

चमेली का तेल : प्रत्येक मंगलवार या शनिवार को सिन्दूर में चमेली का तेल मिलाकर अर्पित करना चाहिए। नियमित रूप से हनुमानजी को धूप-अगरबत्ती लगाना चाहिए। हार-फूल अर्पित करना चाहिए। हनुमानजी को चमेली के तेल का दीपक नहीं लगाया जाता बल्कि तेल उनके शरीर पर लगाया जाता है। ऐसा करने पर सभी तरह की मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

सरसों का तेल : एक कटोरी में सरसों का तेल लेकर उसमें अपनी छाया देखकर उसे शनिवार के दिन शाम को शनिदेव के मंदिर में रख आएं। इसके अलावा आप अलग से शनिदेव को तेल चढ़ा भी सकते हैं। इस उपाय से आपके ऊपर शनिदेव की कृपा बनी रहेगी।

तिल का तेल : तिल के तेल का दीपक 41 दिन लगातार पीपल के नीचे प्रज्वलित करने से असाध्य रोगों में अभूतपूर्व लाभ मिलता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है। विभिन्न साधनाओं व सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए भी पीपल के नीचे दीपक प्रज्वलित किए जाने का विधान है।

शारीरिक कष्ट दूर करने के लिए : शनिवार को सवा किलो आलू व बैंगन की सब्जी सरसों के तेल में बनाएं। उतनी ही पूरियां सरसों के तेल में बनाकर अंधे, लंगड़े व गरीब लोगों को भोजन खिलाएं। ऐसा कम से कम तीन शनिवार करेंगे तो शारीरिक कष्ट दूर हो जाएगा।

दुर्भाग्य से पीछा छुड़ाने का टोटका : सरसों के तेल में सिके गेहूं के आटे व पुराने गुड़ से तैयार सात पूए, सात मदार (आक) के फूल, सिन्दूर, आटे से तैयार सरसों के तेल का दीपक, पत्तल या अरंडी के पत्ते पर रखकर शनिवार की रात में किसी चौराहे पर रखकर कहें- 'हे मेरे दुर्भाग्य, तुझे यहीं छोड़े जा रहा हूं, कृपा करके मेरा पीछा ना करना।' सामान रखकर पीछे मुड़कर न देखें।

धन-समृद्धि हेतु : कच्ची घानी के तेल के दीपक में लौंग डालकर हनुमानजी की आरती करें। अनिष्ट दूर होगा और धन भी प्राप्त होगा।

सुख-शांति हेतु : खुशहाल पारिवारिक जीवन के लिए किसी भी आश्रम में कुछ आटा और सरसों का तेल दान करें।

नए घर की प्राप्ति हेतु उपाय : रुपी के पौधे के पास लोहे के दीये में तिल के तेल में सरसों का तेल मिलाकर काले धागे की बत्ती जलाएं। दीये का मुख 4 दिशाओं और 4 कोणों सहित आठों दिशाओं में करें। फिर दीये को जल में प्रवाहित कर दें। यह कार्य 27 शनिवार तक करेंगे, तो निश्चित ही आप नए घर में प्रवेश कर जाएंगे।

शराब छुड़वाने का टोटका : एक शराब की बोतल किसी शनिवार को शराब पीने वाले के सो जाने के बाद उसके ऊपर से 21 बार उसार लें। फिर उस बोतल के साथ किसी अन्य बोतल में 800 ग्राम सरसों का तेल लेकर आपस में मिला लें और किसी बहते हुए पानी के किनारे में उल्टा गाड़ दें जिससे बोतलों के ऊपर से जल बहता रहे। यह उपाय किसी योग्य गुरु से पूछकर ही करें।

मंदी से छुटकारा पाने के लिए : अगर आपके व्यापार या नौकरी में मंदी का दौर चल रहा है, तो आप किसी साफ शीशी में सरसों का तेल भरकर उस शीशी को किसी तालाब या बहती नदी के जल में डाल दें। शीघ्र ही मंदी का असर जाता रहेगा। व्यापार या नौकरी में उन्नति होती रहेगी।

रोग से मरने की आशंका होने पर : गुड़ को तेल में मिश्रित करके जिस व्यक्ति के मरने की आशंका हो, उसके सिर पर से सात बार उसारकर मंगलवार या शनिवार को भैंस को खिला दें। ऐसा कम से कम पाँच मंगलवार या शनिवार को करें। यह उपाय भी किसी योग्य गुरु से पूछकर ही करें।

मनोवांछित फल प्राप्ति हेतु : पीपल के नीचे सरसों तेल का दीपक लगातार 41 शनिवार तक प्रज्वलित करने से मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है। ●